

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR
1954-55

The Minister of Revenue and Defence Expenditure (Shri A. C. Guha): I beg to present a statement showing Supplementary Demands for Grants for expenditure of the Central Government (excluding Railways) in 1954-55.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS
TWENTIETH REPORT

Shri Altekar (North Satara): I beg to present the Twentieth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions.

PANEL OF CHAIRMEN

Mr. Speaker: I have to inform the House that under sub-rule (1) of Rule 9 of the Rules of Procedure and Conduct of Business, I nominate the following Members on the Panel of Chairmen in place of the Members' nominated earlier by me on the Panel:

Pandit Thakur Das Bhargava, Sardar Hukam Singh, Shri Upendra-nath Barman, Shri Frank Anthony, Shrimati Renu Chakravartty and Shrimati Sushama Sen.

MOTION ON ADDRESS BY THE
PRESIDENT

Mr. Speaker: Now, we will take up the debate on the President's Address.

Before I call upon Shri Tribhuan Narayan Singh to move his Motion of Thanks to the President I have to announce that under rule 21, I fix that the time limit for speeches shall be ordinarily 15 minutes and not more, with the exception of Leaders of various groups, and the Prime Minister for whom 30 minutes or more will be allowed if necessary to reply to the debate on behalf of the Government.

श्री टी० एन० सिंह (जिला बनारस-पूर्व): क्या मैं जान सकता हूँ कि प्रस्तावक को भी उतना ही समय मिलेगा जितना कि दूसरे वक्ताओं को? Shall I get fifteen minutes or more?

Mr. Speaker: He will get more.

श्री टी० एन० सिंह: अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति का निम्नलिखित शब्दों में अभिनन्दन पेश करता हूँ:

“कि इस संशन में समवेत लोक-सभा के सदस्य राष्ट्रपति के उस अभिभाषण के लिये अत्यन्त आभारी हैं जो उन्होंने २१ फरवरी, १९५५ को एक साथ समवेत ससद के दोनों सदनों के सामने देने की कृपा की है।”

[PANDIT THAKUR DAS BHARGAVA in the Chair].

इस प्रस्ताव के बारे में मेरी समझ में कहने को बहुत बातें तो हैं ही, लेकिन हमें जो रास्ता हमारा राष्ट्रपति जी ने अपने चुने हुए और सौचित्य लिखित भाषण में दिखाया है उसका अनुसरण करने की भी मैं कोशिश करूंगा। मेरा यह खयाल नहीं है कि पिछले वर्ष में या गत वर्षों में जितनी बातें हुई हैं या आगे जो हमारा सफल्य हैं, जो हमारी अभिलाषायें हैं यदि उन सब का विवरण इस भाषण में किया जाता तो यह एक एन्साइक्लोपीडिया जैसी किताब बन जाती और इतनी लम्बी-चौड़ी बातों का विवरण देना मेरे विचार में उचित भी नहीं था। इस दृष्टि से जब मैं ने एमैंडमेंट्स वा सशोधनों की श्रेणियों की श्रेणियां देखीं तो मुझे आश्चर्य हुआ और मेरी समझ में नहीं आया कि लोग चाहते क्या हैं। जितनी बातें इस समय इस देश में हो रही हैं और होने जा रही हैं, उन सब का उल्लेख किया जाय, यह सम्भव नहीं है और इस के बारे में किसी को भ्रम नहीं होना चाहिए। इस वास्ते राष्ट्रपति के भाषण में खास खास चीजों का उल्लेख हो यही उचित बात है। अस्तु, मैं आपका ध्यान राष्ट्रपति द्वारा दिए गए पन्तु वाक्यों की तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ। शुरू में ही उन्होंने कहा